



हनुमान् बजरंग बाण-निश्चय प्रेम प्रतीति ते,



<https://www.chalisa.online>

॥ हनुमान् बजरंग बाण ॥

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करै सनमान ।

तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करै हनुमान ॥

चौपाई

जय हनुमंत संत हितकारी । सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥

जन के काज बिलंब न कीजै । आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥

जैसे कूदि सिंधु महिपारा । सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥

आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गी सुरलोका ॥

जाय बिभीषन को सुख दीन्हा । सीता निरखि परमपद लीन्हा ॥

बाग उजारि सिंधु महं बोरा । अति आतुर जमकातर तोरा ॥

अक्षय कुमार मारि संहारा । लूम लपेटि लंक को जारा ॥

लाह समान लंक जरि गी । जय जय धुनि सुरपुर नभ भी ॥

अब बिलंब केहि कारन स्वामी । कृपा करहु उर अंतरयामी ॥

जय जय लखन प्रान के दाता । आतुर है दुख करहु निपाता ॥

जै हनुमान जयति बल-सागर । सुर-समूह-समरथ भट-नागर ॥

ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले । बैरिहि मारु बज्र की कीले ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा । ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा ॥

जय अंजनि कुमार बलवंता । शंकरसुवन बीर हनुमंता ॥

बदन कराल काल-कुल-घालक । राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥

भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर । अगिन बेताल काल मारी मर ॥

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की । राखु नाथ मरजाद नाम की ॥

सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै । राम दूत धरु मारु धाइ कै ॥

जय जय जय हनुमंत अगाधा । दुख पावत जन केहि अपराधा ॥

पूजा जप तप नेम अचारा । नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ॥

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं । तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं ॥

जनकसुता हरि दास कहावौ । ताकी सपथ बिलंब न लावौ ॥

जै जै जै धुनि होत अकासा । सुमिरत होय दुसह दुख नासा ॥

चरन पकरि, कर जोरि मनावौ । यहि औसर अब केहि गोहरावौ ॥

उठु, उठु, चलु, तोहि राम दुहाई । पायं परौ, कर जोरि मनाई ॥

ॐ चं चं चं चं चपल चलंता । ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥

ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल । ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल ॥

अपने जन को तुरत उबारौ । सुमिरत होय आनंद हमारौ ॥

यह बजरंग-बाण जेहि मारै । ताहि कहौ फिरि कवन उबारै ॥

पाठ करै बजरंग-बाण की । हनुमत रक्षा करै प्रान की ॥

यह बजरंग बाण जो जापै । तासौं भूत-प्रेत सब कापै ॥

धूप देय जो जपै हमेसा । ताके तन नहिं रहै कलेसा ॥

दोहा

उर प्रतीति दृढ़, सरन है, पाठ करै धरि ध्यान ।

बाधा सब हर, करैं सब काम सफल हनुमान ॥

॥ <https://www.chalisa.online> ॥